कडू की खेती एवं संरक्षण पर हैंड-होल्डिंग सपोर्ट एवं प्रदर्शन कार्यक्रम की रिपोर्ट

Report on Handholding Support and Demonstration Programme on Cultivation and Conservation of Kadu

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा जड़ी-बूटी सेल, जाईका, हिमाचल प्रदेश वन विभाग के वित्तपोषण से संचालित परामर्श परियोजना के अंतर्गत कडू जड़ी-बूटी की खेती, संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 25 अगस्त, 2026 को तरंड़ा में दूसरे चरण का एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया । कार्यक्रम में जाईका के अंतर्गत गठित चार सामान्य हित समूहों—तरंडा, निगुलसरी, तरंडा-I एवं तरंडा-II—के सदस्यों, जाइका स्टाफ तथा स्थानीय महिला समूहों सहित लगभग 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया । डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, प्रशिक्षण समन्वयक ने बताया कि इस परियोजना के अंतर्गत उनका संस्थान, सामान्य हित समूहों एवं स्थानीय हितधारकों को कडू एवं चिरायता जैसी औषधीय जड़ी-बूटियों की वैज्ञानिक खेती, संरक्षण, उत्पादन तथा विपणन के लिए समय समय पर हैंड-होल्डिंग सपोर्ट एवं कौशल विकास प्रदान कर रहा है । ऊपर वर्णित चार समूह के सदस्यों के लिए पिछले वर्ष एक प्रशिक्षण कार्यक्रम निगुलसरी मे आयोजित किया गया था, इसी के अंतर्गत सदस्यों को फील्ड में प्रेक्टिकल जानकारी सांझा करना और कडु को उगाने में आ रही कठिनाइयों के निवारण हेतु सुझाव एवं जानकारी सांझा करने के उदेश्य से दूसरा हैंड-होल्डिंग सपोर्ट कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है । डॉ. चौहान ने कडु के सामान्य रख-रखाव, कटाई, प्रस्करण के बारे में प्रतिभागियों को अवगत करवाया और कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण एवं हैंड-होल्डिंग कार्यक्रम स्थानीय स्तर पर औषधीय पौधों के संरक्षण के साथ-साथ ग्रामीण समुदायों की आजीविका एवं आय के अवसरों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं । डॉ. संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक (सेवानिवृत) ने प्रतिभागियों को कडू एवं चिरायता की वैज्ञानिक खेती, इसकी पौध तैयार करने तथा इनके संरक्षण से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की तथा कडू के संरक्षण एवं सतत उपयोग से संबंधित विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला । उन्होंन कडू की मैक्रोप्रोलिफरेशन विधि का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया और बताया कि कडू की खेती एवं पौधारोपण के लिए उपयुक्त खेत/क्षेत्र के चयन, मिट्टी एवं स्थल की उपयुक्तता बहुत महत्वपूर्ण है । कडू के खेत पर पानी खड़ा नहीं रहना चाहिए, क्योंकि अत्यधिक नमी जड़ सड़न करती है तथा सर्दियों में पाले के बचाव से खेत को आसपास की घास पतियों से ढक देना चाहिए । श्री सी. एम. शर्मा, सलाहकार, जड़ी-बूटी सेल, जाईका ने औषधीय पौधों के विपणन, बाजार तक पहुंच तथा लाभ-साझाकरण से संबंधित विषयों पर प्रतिभागियों को जानकारी प्रदान की । कार्यक्रम के दौरान कडू सामान्य हित समूह के सदस्यों को फील्ड में व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन भी दिया गया। प्रतिभागियों ने कडू की खेती में आ रही विभिन्न कठिनाइयों एवं समस्याओं को साझा की, जिसके समाधान के लिए विशेषज्ञों द्वारा आवश्यक सुझाव एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया गया ।

The Himalayan Forest Research Institute, Shimla, organized the second phase of a one-day training and demonstration programme on 25 August 2026 at Taranda, with the objective of promoting the cultivation and conservation of Kadu, an important medicinal herb. Approximately 60 participants, including members of the four Common Interest Groups (CIGs) formed under JICA, namely Taranda, Nigulsari, Taranda-I and Taranda-II, along with JICA staff and members of local women's groups, participated in the programme. Dr. Joginder Singh Chauhan, Training Coordinator, informed the participants that, under the project, the Institute is providing regular hand-holding support and skill development to the Common Interest Groups and local stakeholders for the scientific cultivation, conservation, production and marketing of medicinal herbs such as Kadu and Chirayata. He further

informed that a training programme for the members of the above-mentioned four CIGs had been organized at Nigulsari during the previous year. As a follow-up to that programme, the second hand-holding support programme was organized to provide practical, field-level guidance to the members and to address the difficulties being faced in the cultivation of Kadu through expert advice and technical support. Dr. Chauhan apprised the participants of the general maintenance, harvesting and processing practices of Kadu. He emphasized that such training and hand-holding support programmes can play an important role in promoting the conservation of medicinal plants at the local level while also strengthening livelihood and income-generation opportunities for rural communities. Dr. Sandeep Sharma, Senior Scientist (Retd.), shared important information on the scientific cultivation of Kadu and Chirayata, raising of planting material, and their conservation. He also highlighted various issues related to the conservation and sustainable utilization of Kadu. He provided hands-on training on the macro-proliferation method of Kadu and emphasized that the selection of a suitable field/site, along with appropriate soil and site conditions, is crucial for the successful cultivation and establishment of Kadu. He further told that water stagnation should be avoided in Kadu fields, as excessive moisture may lead to root rot. He also advised that, during winter, the crop/field should be covered with locally available grasses and leaf litter to protect the plants from frost. Shri C. M. Sharma, Consultant, Jadi-Buti Cell, JICA, provided information to the participants on various aspects of medicinal plant marketing, market access and benefit sharing. During the programme, practical, field-level hands-on training and demonstrations were also provided to the members of the Kadu Common Interest Groups. The participants shared various difficulties and problems encountered during Kadu cultivation, and the experts provided appropriate suggestions and technical guidance for addressing these issues. The programme aimed to strengthen the technical capacity of local stakeholders, promote the scientific and sustainable cultivation of Kadu, and support the conservation and sustainable utilization of medicinal plants while enhancing livelihood and income-generation opportunities for rural communities.

Intraction with participants

Field Demonstration